Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 01/11/2019 Accepted on : 19/11/2019 Publication Date: 30/12/2019

त्रिलोचन : जन-जन के कवि

डॉ.प्रकाश कुमार अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, खड़गपुर कॉलेज, हिंदी- विभाग, खड़गपुर, प.बं,

सारांश : त्रिलोचन जनवादी विचारधारा के उन कवियों में से हैं, जिनके हृदय में जहाँ एक ओर शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति देखने को मिलती है, वहीं दूसरी ओर शोषक वर्ग के प्रति तीव्र विरोध का स्वर सुनाई देता है। अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर ये किसान, मजदूर के 'माउथ पीस' नजर आते हैं, वहीं दूसरी ओर नेतावर्ग, पूंजीपति वर्ग, जो देश को दोनों हाथों से लूट रहे हैं, विरोध देखने को मिलता है। ये मानवता के पक्षधर हैं। यही कारण है कि समष्टि कल्याण का भाव इनकी रचनाओं में निहित है।

मूल शब्द- समष्टि, दिगंत, अभिव्यक्ति, विशिष्ट, यथार्थ, विषमता, आह्वान, अपरिपक्व, समसामयिक रूढ़िवादी, पराधीनता।

प्रस्तावना:

त्रिलोचन शास्त्री हिंदी साहित्य में प्रगतिशील जनवादी विचारधारा के कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। "त्रिलोचन घटनाओं के कवि नहीं हैं। वे मूल्यों के कवि हैं।"1

इनका जीवन कष्टों और संघर्षों का जीवन है। इनकी अनेक कविताओं में हमें उस संघर्ष के दर्शन होते हैं। अपनी 'दिगंत' में संकलित 'स्पष्टीकरण' में कवि कहते है-

"मित्रों, मैंने साथ तुम्हारा जब छोड़ा था

तब मैं हारा थका नहीं था, लेकिन मेरा

तन भूखा था मन भूखा था तुमने टेरा

उत्तर मैंने दिया नहीं तुमको, घोड़ा था

तेज तुम्हारा, तुम्हें ले उड़ा! मैं पैदल था।"2

त्रिलोचन ने अपने जीवन में यथार्थ को जिया और भोगा है। इननी रचनाओं में भी इस यथार्थ की स्पष्ट अभिव्यक्ति दिखाई देती है। कवि लिखते हैं-

"जीवन देखा, धूल और मिट्टी से आया

था, रक्त के कणों में यह संबंध समाया

था, कुछ ऐसा कि नदी की भी कल कल छल छल

मैं समाज में सुनता था, जिसका था खाना

बिना झिझक बेलाग मुझे उसका था गाना।"3

त्रिलोचन शोषक वर्ग के तीव्र विरोधी हैं। उनका मानना है कि शोषक वर्ग के खात्मे के बिना समाज का और देश का कल्याण नहीं हो सकता। वे लिखते हैं कि जिस दिन शोषित वर्ग एकजुट होकर इस वर्ग के विरुद्ध क्रांति का विगुल फूकेंगे, उस दिन इस वर्ग को समान अधिकार प्राप्त होगा।

"कठफोड़े ने मार-मार कर उन कीड़ों को

बाहर आज निकाल लिया आहार के लिए

जो तरु के अंतस्थ शत्रु थे।"4

त्रिलोचन मानव के थोथे अहंकार के तीव्र विरोधी हैं। उनका मानना है कि यदि एक वर्ग साधन-संपन्न है, तो उसे अहंकार-मुक्त होना चाहिए। उनका कहना है कि जब तक वे इस विषमता को समाज से उखाड़ नहीं फेकेंगे, तब तक उन्हें चैन नहीं आएगा। वे लिखते हैं-

"अहंकार जो थोथा

है वह मुझको सह्य नहीं है, मानव असली

मुझको प्रिय है- खड़ा खेत में है जो थोथा

मैं उसको उखाड़ डालूंगा-ज्वर है फसली

विषम समाज व्यवस्था सम जब खिलाएगा

तभी, तभी संतोष इस हृदय में आएगा।"5

त्रिलोचन ने राजनीतिक विषयों पर अनेक कविताएं लिखी हैं। ये मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रहे हैं। यही कारण है कि इनकी कविताओं में व्यवस्था- परिवर्तन के लिए क्रांति का आह्वान देखने को मिलता है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह इनके संबंध में कहते हैं कि "दरअसल अच्छी राजनीतिक कविता बहुत कठिन कला है, क्योंकि राजनीतिक काव्य रचना के स्पष्ट खतरे हैं। एक खतरा तो 'क्लीशे' और 'जर्णन' का ही है। इसलिए राजनीतिक भाषा के विरोध या विडंबनापूर्ण प्रयोग द्वारा ही अच्छी राजनीतिक कविता की रचना संभव है। इसके अलावा तो वही रास्ता बचा रहता है जो त्रिलोचन ने अपनाया। रोजमर्रा की राजनीति पर टिप्पणी करने के बजाए जीवन में गहरे पैठी हुई राजनीति का आलोचनात्मक अंकन।"6

स्वाधीनता के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की अपरिपक्व नीतियों का त्रिलोचन ने खुलकर विरोध किया है। कवि का मानना है कि नेहरू की नीतियों के कारण ही देश को महंगाई, बेरोजगारी, भुखमरी आदि का सामना करना पड़ रहा है। कवि लिखते हैं-

"निरहू ने भाई, जब से घरबार संभाला

तब से सब कुछ बदल गया है। उन्हें लड़ाई

अच्छी लगती नहीं, शांति का गरम मसाला

बाँट रहे हैं मुफ्त सभी को।"7

त्रिलोचन इस सड़ी हुई व्यवस्था के प्रति भी आक्रोशित हैं। उनका मानना है कि नेता देश को लूट रहे हैं और जनता मूक दर्शक बनकर देख रही है। यही कारण है कि कवि जनता को एकजुट होकर क्रांति करने के लिए प्रेरित करते हैं। कवि कहते हैं-

"सड़ी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए

मैं ललकार रहा हूँ उस सोई जनता को,

जिसको नेता लूट रहे हैं।"8

इस संसार में ऐसे बहुत से प्राणी हैं जो मानवता की बातें करते हैं, परोपकार का राग अलापते हैं लेकिन उनकी कथनी और करनी में हमें बहुत बड़ा फर्क देखने को मिलता है। कवि का ऐसा मानना है कि मानव का कल्याण सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें करने से नहीं होगा बल्कि यथार्थ की भावभूमि में उतरकर उसका भला करना होगा। तभी मानवता का उद्देश्य सफल होगा। मानव को मानव मानना मानवता की पहली सर्त है-

"मानवता की बातें करते हो

कितना उत्साह दिखा जाते हो

उनको अब पहचानो

मानव जानो/मानो”9

त्रिलोचन की कविताओं में हमें सामाजिक जीवन की उस वेदना का स्वर सुनाई देता है, जो कहीं- न- कहीं हमें अंदर तक झकझोर देता है। ये वेदना हमें विचलित तो करती है। साथ- ही- साथ इसके माध्यम से हम उस यथार्थ से भी अवगत हो जाते हैं, जो समसामयिक परिस्थितियों की देन है।कवि लिखते हैं-

“बुढ़िया जब मर गई उसे ले जाकर फेंका

अंधे कुएं में चमारों ने, थोड़ी लकड़ी

नहीं किसी ने दी उसको, वह रास्ता छेंका

लड़कों का परेत के भय ने छकड़ा छकड़ी

आया जाया करते थे, हो गए महीनों,

सुना कि बुढ़िया है अब तक जैसी की तैसी

पड़ कुएं में...।”10

त्रिलोचन नवीन निर्माण के पक्षधर हैं। उनका मानना है कि प्राचीन घिसी- पिटी मान्यताएं व्यक्ति के विकास में बाधक होती हैं। मनुष्य का पुरुषत्व इसी में है कि वह पराधीनता को छोड़कर नूतन मार्ग को ग्रहण करे। इसलिए कवि कहते हैं-

”कर नूतन मार्ग दिखा कुछ

तू अपने पौरुष का करतब

पराधीनता विविध तोड़कर दिखा

नई गति का उपक्रम अब

बहुत पुरातन की छायायें

मानवता ने दुख पाया है

बरगद की छाया के भीतर

नहीं अन्यतरु बढ़ पाया है।”11

त्रिलोचन जन के कवि हैं। इन्होंने शोषित वर्ग के अभावों और कष्टों को देखा है जो निरंतर शोषण की चक्की में पिस रहे हैं। गरीबी और भुखमरी से पीड़ित ये शोषित वर्ग कठिन परिश्रम करके अपने लिए दो वक्त की रोटी भी जुगाड़ नहीं कर पाते। इस तथ्य को त्रिलोचन बखूबी अपनी रचना में दिखाते हैं। कवि कहते हैं-

“तन का खटना, खट कर लटना, पोश न माना

दिग दिगंत व्यापी पथ को भी कोश न माना

पैरों ने फिर भी हाथों को काम नहीं है

हाट पहुंच तो गए टेंट में दाम नहीं है।”12

रूढ़िवादी भावनाएं समाज और देश के उत्थान में बाधक होती हैं। जब- तक मनुष्य इन रूढ़िवादी विचारधाराओं का त्याग नहीं करेंगे, तब तक सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों का अंत नहीं होगा। आवश्यकता है मनुष्यों के विचारों में परिवर्तन की। यही कारण है कि कवि कहते हैं-

"ये नए युग से अपरिचित और सशंकित

ये गए सब दिन सताए

चल रहे प्राचीनता से लौ लगाए

एक अपनी ही नई दुनिया बसाए

आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही

भा रही है भा रही है भा रही है।"13

निष्कर्ष:

त्रिलोचन की रचनाओं में सपाट बयानबाजी के दर्शन होते हैं। ये बातों को गोल- गोल घुमाने के पक्ष में नहीं हैं। ये जो कहते हैं, उसमें यथार्थ है। इनका मानना है-

"कोई भूखा हो तो उसको ला कर रोटी

दो, मत लंबी चौड़ी बात बनाओ इसकी उसकी।"14

त्रिलोचन को साहित्य का हनुमान कहा जाता है। इनकी उन्नत सृजनशीलता इन्हें ये उपाधि प्रदान करती है। बेबाक शैली, फक्कड़ाना स्वभाव और समाज के दबे कुचले लोगों के प्रति इनकी संवेदना निश्चय ही इन्हें महान बनाती है। यही कारण है कि सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ.रामविलास शर्मा कहते हैं-

"त्रिलोचन जिस खास अर्थ में आधुनिक हैं, वह यही गरीबी से उनकी कविता का नाता है। नयी कविता ने अपने लिए जो परिधि बनाई, उसने जनता के दुख- दर्द को उससे बाहर रखा। त्रिलोचन की कविता इस परिधि को तोड़ती है।...।"15

संदर्भ -ग्रंथ :

1. त्रिलोचन के बारे में, संपादक- गोविंद प्रसाद, मैनेजर पांडेय का लेख पृ. 157
2. दिगंत, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 17
3. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 85
4. दिगंत, त्रिलोचन शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.15
5. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 93
6. त्रिलोचन के बारे में, संपादक- गोविंद प्रसाद, पृ. 88
7. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 76
8. अनकहनी भी कुछ कहनी है, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 87
9. तुम्हें सोचता हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 83
10. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 96
11. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 27
12. फूल नाम है एक, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 71
13. धरती, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 25
14. उस जनपद का कवि हूं, त्रिलोचन शास्त्री, पृ. 87
15. त्रिलोचन के बारे में, रामविलास शर्मा का लेख, त्रिलोचन:आधुनिक और परंपरा बोध, पृ.55.